ईसा मसीह पर क्यों भरोसा

चार ठोस गवाह

īsā masīh par kyoṅ bharosā: chār ṭhos gawāh

Why We Trust in Isa Masih: Four Witnesses

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 11]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover has been derived by permission from
Bible Society Australia – The Wild Bible
https://freebibleimages.org/illustrations/wb-john-baptist/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

पहला गवाह : यहया नबी	1
दूसरा गवाह : ईसा मसीह के काम	3
तीसरा गवाह : ख़ुदा बाप	3
चौथा गवाह : पाक नविश्ते	6
इनसान की इज़्ज़त या ख़ुदा की?	7
इंजील, यूहन्ना 5:30-47	9

ईसा मसीह की तालीम अनोखी थी। यह ऐसी बातें थीं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल-मसीह कर सकता था। सुननेवालों ने सोचा, यह तो बड़ी बड़ी बातें हैं।

► **लेकिन हम किस तरह जान सकते हैं कि उसकी यह बातें सच हैं? कि वह सचमुच अल-मसीह है?**
यह हमारे लिए भी एक अहम सवाल है।

► **हम किस तरह उसकी बातों पर भरोसा कर सकते हैं?**
ईसा मसीह लोगों का यह सवाल जानता था। एक मौक़े पर उसने इसका जवाब भी दिया।

► **जवाब क्या था?**
जवाब में उसने फ़रमाया कि मेरे चार गवाह हैं। ऐसे ठोस और पक्के गवाह जो कोई भी झूठे नहीं ठहरा सकता।

पहला गवाह : यहया नबी

पहला गवाह यहया नबी है। जब यहया दरियाए-यरदन पर लोगों को बपतिस्मा देने लगा तो बुज़ुर्ग उसके पास आए। वह जानना चाहते थे

कि यह अपने बारे में क्या कहता है। क्या यह मसीह तो नहीं है? यहया ने साफ़ जवाब दिया कि मैं मसीह नहीं हूँ। लेकिन एक दिन जब ईसा मसीह हाज़िर हुआ तो यहया ने फ़रमाया कि यही आनेवाला मसीह है :

> मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।' अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है। (यूहन्ना 1:32-34)

यों यहया नबी ने साफ़ फ़रमाया कि ईसा, अल-मसीह है, वह जो नजात देने के लिए दुनिया में भेजा गया है। इसलिए ईसा मसीह ने यहया के बारे में फ़रमाया,

> यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था। (यूहन्ना 5:35)

► **यहया क्यों चराग़ था?**

चराग़ अंधेरे को रौशन करके हमें रास्ता दिखाता है। यहया नबी ने रूहानी अंधेरे को रौशन करके मसीह का रास्ता दिखाया।

दूसरा गवाह : ईसा मसीह के काम

यहया की गवाही अहम थी, लेकिन वह इनसान की गवाही थी। दो और गवाह ज़्यादा अहम हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह इनसानी गवाह नहीं हैं। मसीह ने फ़रमाया,

> मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है—वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। (यूहन्ना 5:36)

► **यह किस क़िस्म के काम थे जो मसीह के गवाह थे?**

ईसा मसीह की पाक ज़िंदगी, उसके मोजिज़े और उसका कलाम। यह सब साफ़ साफ़ उसकी गवाही देते थे।

तीसरा गवाह : ख़ुदा बाप

तीसरा गवाह ख़ुदा बाप है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। (यूहन्ना 1:37)

► **ख़ुदा बाप ने किस तरह गवाही दी?**

जब यहया नबी ईसा मसीह को बपतिस्मा दे रहा था तो लिखा है कि

> जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।” (लूक़ा 3:21-22)

किसी और दिन ईसा मसीह तीन शागिर्दों के साथ एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया कि अचानक मूसा और इलयास ज़ाहिर होकर उससे बातें करने लगे। अचानक

> एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।” यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। (मत्ती 17:5-6)

लेकिन शायद मसीह ज़्यादा यह वाक़ियात याद नहीं कर रहा था। क्योंकि इस बात के ऐन बाद उसने एक क़िस्म की पहेली पेश की। उसने फ़रमाया,

> अफ़सोस, तुमने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न उसकी शक्लो-सूरत देखी, और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। (यूहन्ना 5:37-38)

► **क्या कोई इनसान सीधे ख़ुदा की आवाज़ सुन सकता है?**
हरगिज़ नहीं!

► **क्या कोई इनसान उसकी शक्लो-सूरत देख सकता है?**
हरगिज़ नहीं!

► **तो फिर ईसा मसीह का क्या मतलब है?**
हम पहेली का हल तीन सवालों से कर सकते हैं।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ख़ुदा बाप की आवाज़ क्यों न सुनी?**
ईसा मसीह उनके दरमियान था और उन्हें ख़ुदा बाप की आवाज़ सुनाता था। वह यह कलाम सुनते तो थे मगर उसकी आवाज़ उनके दिलों तक नहीं पहुँचती थी। वह रूहानी बहरे थे।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ख़ुदा बाप की शक्लो-सूरत क्यों न देखी?**
ईसा मसीह ख़ुदा बाप को उन पर ज़ाहिर करता था मगर वह उसमें ख़ुदा की शक्लो-सूरत नहीं पहचान सकते थे। वह रूहानी अंधे थे।

► **ख़ुदा बाप का कलाम यहूदी बुज़ुर्गों के दिलों में क्यों नहीं बसता था?**
ईसा मसीह ख़ुदा का कलाम था, और वह उनके दरमियान था। लेकिन वह उस पर ईमान नहीं रखते थे, इसलिए उनके दिलों में नहीं बसता था।

ग़रज़ चूँकि ईसा मसीह ख़ुदा का कलाम है इसलिए वह ख़ुदा बाप की आवाज़ सुनाता और उसकी शक्लो-सूरत ज़ाहिर करता था। तो भी

अकसर यहूदी बुज़ुर्गों ने उसे क़बूल न किया। उन्होंने यह गवाही अपने दिलों में बसने न दी। जिस तरह यूहन्ना रसूल फ़रमाता है कि

> अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़ंद की तसदीक़ की है। जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है।
> (1 यूहन्ना 5:9-10)

► **क्या ख़ुदा की गवाही आपके दिल में बसता है?**

चौथा गवाह : पाक नविश्ते

पाक नविश्ते बार बार मसीह की पेशगोई करते हैं। इसलिए ईसा मसीह ने यहूदी बुज़ुर्गों पर अफ़सोस किया,

> तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। (यूहन्ना 5:39-40)

कितनी अलमनाक बात। इन बुज़ुर्गों को मालूम था कि पाक नविश्तों से अबदी ज़िंदगी मिलती है। वह उसमें ढूँडते रहते थे मगर बेफ़ायदा। ढूँडने में कामयाबी उस वक़्त होती है जब रूहुल-क़ुद्स हमारी रूहानी आँखों को खोल देता है। तब ही हमें समझ आती है कि पाक नविश्ते ईसा मसीह की ठोस गवाही देते हैं। तब ही वह हमारे दिल में बसने लगता है,

रग रग में धड़कने लगता है। मसीह की मुहब्बत, उसकी ज़िंदगी, उसका रहम, हाँ उसका पूरा वुजूद हममें बसने लगता है।

इनसान की इज़्ज़त या ख़ुदा की?

► **जब ईसा मसीह के इतने ठोस गवाह हैं तो यहूदी बुज़ुर्ग क्यों उस पर ईमान नहीं ला सकते थे?**

ईसा मसीह ने ख़ुद इसका जवाब दिया,

> कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे की इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। (यूहन्ना 5:44)

ईसा मसीह ईमान न रखने की ज़हरीली जड़ ज़ाहिर करता है।

► **वह क्या है?**

बुज़ुर्ग इतने ज़ोर से अपनी इज़्ज़त के पीछे पड़े रहते थे कि वह उस इज़्ज़त के लिए अंधे थे जो ख़ुदा देता है। जो भी धूमधाम से उनकी इज़्ज़त करता था उससे वह लिपट जाते थे। इसके मुक़ाबले में मसीह सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा बाप से इज़्ज़त पाना चाहता था। उसे बुज़ुर्गों से इज़्ज़त मिलने की परवाह ही नहीं थी। उसका पूरा ध्यान ख़ुदा बाप की मरज़ी पूरी करने पर था। वह ख़ूब जानता है कि दूसरों की तरफ़ से मिली इज़्ज़त पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

► **क्या आप सचमुच सिर्फ़ ख़ुदा से इज़्ज़त मिलना चाहते हैं?**
अगर नहीं तो आप बुज़ुर्गों की तरह अंधे हैं। तब वह बात आप पर भी सादिक़ आएगी जो मसीह ने बुज़ुर्गों के बारे में फ़रमाया,

> यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा। (यूहन्ना 5:45)

► **मूसा नबी क्यों उन पर इलज़ाम लगा रहा है?**
इसलिए कि उनका पूरा ध्यान उस इज़्ज़त पर था जो इनसान की तरफ़ से है। इसलिए वह शरीअत के रूहानी उसूलों के लिए अंधे हो गए थे। अगर वह सचमुच मूसा नबी की बातों यानी शरीअत पर ईमान रखते और अमल करते तो वह ईसा मसीह पर भी ईमान लाते।

ग़रज़, ईसा मसीह के चार ठोस गवाह हैं। तो भी बुज़ुर्ग अपनी इज़्ज़त के बाइस उस पर ईमान नहीं ला सकते थे।

यह एक अहम बात है।

► **क्या आप अपनी इज़्ज़त बचाने या बढ़ाने की कोशिश में ईसा मसीह पर ईमान नहीं ला सकते?**
याद रखो कि उसके चार ठोस गवाह हैं : यहया नबी, उसके काम, ख़ुदा बाप और पाक नविश्ते।

इंजील, यूहन्ना 5:30-47

मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़ अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।

अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी गवाही मोतबर न होती। लेकिन एक और है जो मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उसकी गवाही सच्ची और मोतबर है। तुमने पता करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने हक़ीक़त की तसदीक़ की है। बेशक मुझे किसी इनसानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने उसकी रौशनी में ख़ुशी मनाना पसंद किया।

लेकिन मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है—वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है।

इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न उसकी शक्लो-सूरत देखी, और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है।
तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।
मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह की मुहब्बत नहीं। अगरचे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे। कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। लेकिन यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा, जिससे तुम उम्मीद रखते हो। अगर तुम वाक़ई मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा। लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!